पुरुषादाणीय तीर्थंकर
श्री पार्श्व प्रभु के
चरणों में शत् शत् वन्दन!

पुरुषादाणीय तीर्थंकर श्री पार्श्व प्रभु ने अपने श्रमणकाल में पूर्ववर्ती राज्यों का विचरण करते हुए शिवनाथ नदी के इस तटवर्ती स्थल पर साधना की। प्रभु श्री के अंकित चरण रज को उस समय के श्रद्धालु भक्तों ने तराश कर सुरक्षित कर लिया और वे प्रभु श्री के चरण पादुका को छत्रीनुमा मंदिर बनाकर पूजा अर्चना करते रहे।

कालान्तर में खण्डित मंदिर का कलचुरी वंशजों ने पुनः निर्माण वि.सं. 919 में ओसवंश के स्थापक पूज्यपाद श्री रत्नप्रभसूरि. महा. के शिष्य पू. जैनाचार्य कक्कसूरि आदि 500 साधु-भगवंतों की सान्निध्यता में पुनः प्रतिष्ठा कराई। (पार्श्व चरित्र पृ.सं.81)

सन् 1966 में इस पवित्र विहार विच्छिन्न क्षेत्र का तीर्थोद्धार करते हुए खण्डहर हुए मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया। सन् 1995 (वि.सं.2051) में भव्य जिनालय बनाकर पू.श्री लब्धि-जयंत-विक्रम गुरुकृपा पात्र पू. आचार्य श्री राजयश सूरीश्वरजी म.सा. की सान्निध्यता में प्रतिष्ठा कराई गई। प्रभु श्री का पवित्र चरण आज भी मांगलिकता से देदीप्यमान है।

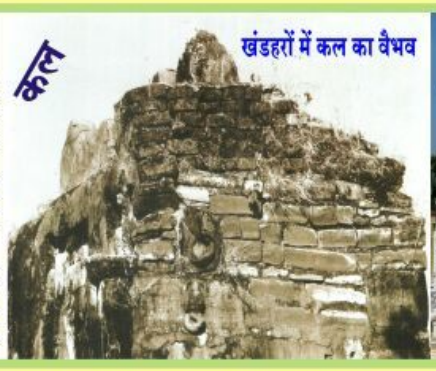

तीर्थंकर श्री पार्श्व प्रभु द्वारा श्रमणकाल में शिवनाथ नदी के प. तट पर की गई साधना की तपोभूमि विहार विच्छेद स्थल के तीर्थोद्धार-जीर्णोद्धार संकल्पन का

जैन पर्व पर स्वर्णिम महामहोत्सव

10 से 14 दिसम्बर 2017

तीर्थ में महापूजा

मंगल कल्लाण आवासं एवं असंख्य श्रद्धालुओं की गहरी आस्था की पवित्र तपोभूमि
श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ नगपुरा दुर्ग (छ.ग.) के
तीर्थोद्धारक, जीर्णोद्धारक, तीर्थप्रतिष्ठाता, निश्रादाता
श्री लब्धि-जयंत-विक्रम गुरुकृपापात्र

प.पू.आचार्य श्रीमद् राजयश सूरीश्वर जी म.सा.

की आज्ञानुवर्तिनी तेजस्वी आराधिका प.पू. साध्वी
श्री शुभ्रांशुयशा श्री जी, श्री लक्ष्ययशा श्री जी, श्री मैत्रीयशा श्री जी,
श्री लब्धियशा श्री जी एवं श्री आज्ञायशा श्री जी म.सा.

आइये, प्रभु श्री पार्श्व के जन्म-दीक्षा कल्याणक दिवस पर

अट्ठम तप

की महामांगलिक आराधनार्थ, पधारिये
श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ, नगपुरा-छत्तीसगढ़
स्टेशन एवं निकटतम शहर - दुर्ग , एअरपोर्ट -रायपुर

फैक्स नं.-0788-2621207, वाटस अप-9131836155 E-mail-nagpurau.tirth@gmail.com

खंडहरों में जिनशासन का जीवंत वैभव

कोई तीन हजार वर्ष पूर्व तीर्थंकर परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु ने अपने श्रमण काल में छत्तीसगढ़ के दुर्ग शहर के निकट शिवनाथ नदी के पश्चिमी तट पर साधना की थी। साधना काल में प्रभु श्री के चरण यहां की भूमि पर अंकित हो गए थे। उस समय के भक्तों ने श्रद्धा के साथ उक्त चरण चिन्ह को पत्थर पर अंकित कर लिया तथा एक देहरी का निर्माण कर चरण पादुका की भक्ति भाव से पूजा प्रारंभ कर दी थी। कुछ समय बाद यह देहरी क्षतिग्रस्त हो गई तो इस देहरी का श्रद्धालुओं ने पुनः निर्माण कराया। संवत् 919 अर्थात 862 ईसवीं में पूज्यपाद जैनाचार्य श्री कक्कुसूरीश्वर जी महाराज का–500 साधुओं के साथ श्री सम्मेत शिखिर महातीर्थ की ओर जाते हुए–यहां आगमन हुआ था। तब तत्कालीन श्रद्धालुओं ने धूमधाम से नूतन देवालय में चरण पादुका की प्रतिष्ठा कराई। (शिलालेख)

समय के बीतते चक्र के साथ यह देवालय भी धीरे–धीरे क्षतिग्रस्त होता गया। निकटवर्ती ग्रामवासी यहाँ समय–समय पर पूजा अर्चना करते रहे। नदी नालों से भरे पूरे इस क्षेत्र में परमात्म भक्ति का आनन्दोत्सव था। हजारों वर्ष बाद इस पवित्र भूमि में आध्यात्मिक जागृति की नई घड़ी आई, संवत 2023, बैसाख शुक्ल 11 दिनांक 1मई 1966 को, इसी दिन एक सपना देखा गया..... एक संकल्प लिया गया..... खण्डहरों के वैभव में छिपे परमात्म भक्ति के स्वर्गिक सौन्दर्य के अस्तित्व और परचम को लहराने वाली गाथा को चिरस्थायी बनाने का। साथ में एक स्वप्नदृष्य और था, प्रभु श्री के पावन चरणरज से पवित्र विहार विच्छेद स्थल का तीर्थोद्धार एवं खंडहर हुई देहरी को भव्य जिनालय बनाने का.....संकल्प किया था एवं स्वप्न विद्वत श्रावकवर्य श्री रावलमल जैन 'मणि' ने देखा था। उनका यह स्वप्न भव्य शिल्प एवं स्थापत्य कला के साथ भव्य जिनालय निर्माण के रूप में देश भर के जैन संघों,संस्थाओं,श्रावक–श्राविकाओं द्वारा तन, मन, धन का अनुमोदनीय लाभ लिये जाने से भव्य जिनालय शनैः शनैः साकार होने लगा। "सर्व मंगल मागल्यं" की उदात्त भावना के साथ उठे असंख्य हाथों और बढ़ते कदमों से श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ का भव्यातिभव्य स्वरूप प्रत्यक्ष उपस्थित हो गया।

जैनम् जयति शासनम् का उद्घोष हुआ.

तीर्थ में तीर्थंकर श्री पार्श्व प्रभु के जन्म–दीक्षा कल्याणक की उमंग एवं उत्साह के साथ महा महोत्सव पूर्वक आराधना–एक झलक

पोष बद 9 को पवित्र श्री शत्रुंजया,गंगा,यमुना, सरस्वती, ब्रम्हपुत्र, सिन्धु, नर्मदा, महानदी, शिवनाथ सहित 108 नदियों का जल स्नात्रादि विधि पूर्वक प्रभु श्री के जन्म–कल्याणक दिवसे तीर्थ के मेरु पर्वत पर महाअभिषेक हेतु कलश यात्रा लाया जाना।

प्रभु श्री को पोष बद 10 की रात्रि कुमारपाल महाराजा, महामंत्री, नगरसेठ सहित श्रावक–श्राविकाओं द्वारा जन्म–कल्याणक महाआरती।

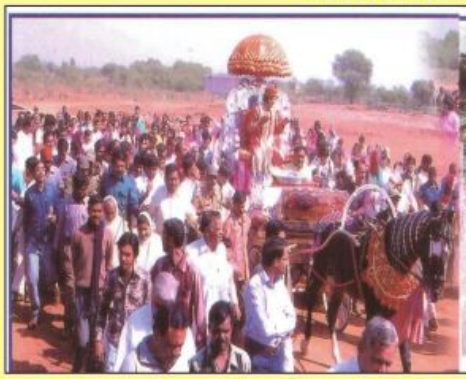

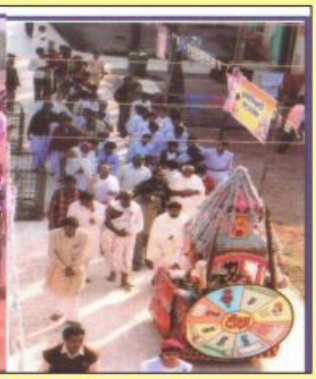

पोष बद 11 प्रभु श्री का दीक्षा–कल्याणक वरघोड़ा–प्रभुभक्ति को तीर्थ में उमड़ता जन सैलाब।

श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ में चिदानन्द सम्पदा

मेरु पर्वत

श्री पार्श्व प्रभु का अंकित चरण

श्री नमिऊण पार्श्व जिनालय

श्री विश्वशांति तीर्थ दर्शन उद्यान एवं शाश्वत जिन मंदिर

श्री कल्याण पार्श्व जिनालय

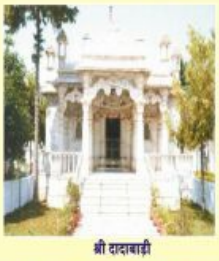

श्री दादावाड़ी

श्री सिद्धचक्र मंदिर

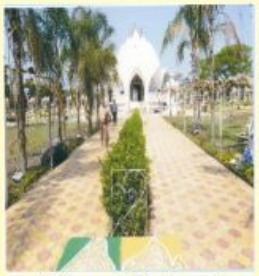

श्री तीर्थंकर उद्यान एवं श्री महावीर कमल मंदिर

श्री चारित्र गुरु मंदिर

धन्य मुहूर्त
८ अप्रैल १९७९
वैशाख सुद ११, सं. २०३६

तीर्थोद्धार मांगलिकता के संचयन का प्रारम्भ

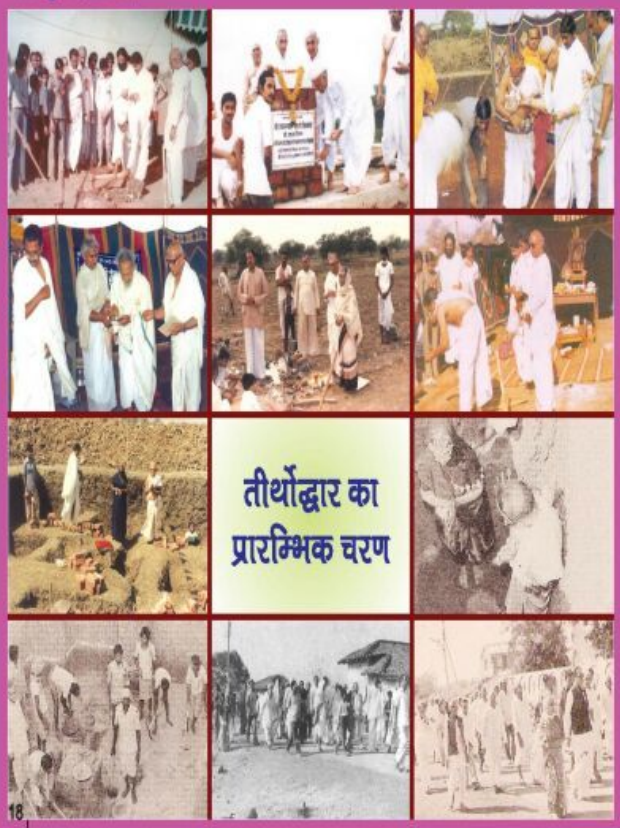

तीर्थोद्धार का प्रारम्भिक चरण

श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ में बालू एवं वनस्पतियों की लुगदी वज्रलेप से पार्श्व प्रभु की प्रतिमा

मूर्ति निर्माण के इतिहास में सर्वप्रथम यह पहला अध्याय लिखा है वनस्पतिक पदार्थों के अनुसंधान में सुविज्ञ डॉ. रावलमल जैन 'मणि' ने। चार वर्षीय कड़े परिश्रम से जिनेश्वर परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु की ३१-३१ इंच की दो मूर्तियों का निर्माण श्री मणि ने पूरा किया। इन प्रतिमाओं की असंख्य श्रद्धालुओं की गहरी आस्था के प्रतीक श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ, नगपुरा में २३ जनवरी २०११ को महान तपस्वी आचार्य देवेश श्रीमद् नवरत्नसागर सूरीश्वर जी म.सा. के कर कमलों से अंजनशलाका (प्राणप्रतिष्ठा) कराकर चल प्रतिष्ठा कराई गयी तथा २ मार्च २०११ को महोत्सव पूर्वक सप्तशिखरमय श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ नगपुरा दुर्ग (छ.ग.) के उवसग्गहरं पार्श्व महाप्रासाद में प्रतिष्ठित की गई हैं।

सप्तशिखर महाप्रसाद में विस्तारित मंडप की प्रतिष्ठा

तीर्थोद्धार विकास क्रम में उवसग्गहरं जिनालय ३२०० वर्ग फुट रंगमंडप का जीर्णोद्धार कराया गया इस क्रम में श्री नमिऊण पार्श्व जिनालय श्री कल्याण पार्श्व जिनालय के जीर्णोद्धार के साथ सप्तशिखर महाप्रसाद में नूतन जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा प.पू.आचार्य श्री नित्यानंद सूरी. म. की निश्रा में २ मार्च २०११ को सम्पन्न हुई

प्राकृतिक उपहारों से सुसज्ज आने वाले कल की सौगात
तीर्थंकर उद्यान

श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ नगपुरा ने तीर्थोद्धार-जीर्णोद्धार की एतिहासिक गरिमामय गाथा लिखते हुए अपना सर्वोदयी विश्वास विशाल जनमानस में स्थापित किया है। तीर्थ परिसर के विशाल भू-भाग में तीर्थंकर उद्यान निर्मित है यहाँ परम तारक देवाधिदेव श्री ऋषभदेव प्रभु से लेकर शासनपति श्री महावीर स्वामी तक २४ तीर्थंकर परमात्माओं को जिन वृक्षों के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त हुआ वह वृक्ष रोपित किया गया है। प्रत्येक परमात्मा की केवलज्ञान मुद्रा में प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यहाँ तीर्थंकर परमात्माओं की प्रेरक यशोगाथा शिलालेख पर उत्कीर्ण किया गया है। संदर्भित ग्रंथों में केवलज्ञान वृक्षों की वैज्ञानिक शोधपरक जानकारी को आलेखित किया गया है जो वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए अनुपम सौगात है।

नूतन सहस्राब्दी १ जनवरी २००० को वि.सं. २०५६ वी.सं. २५२६ से उद्यान प.पू.साध्वी श्री निपुणाश्रीजी पू.सा.जतनकंवरजी एवं पू.सा. आगमरसा श्री जी म.सा. की मंगलमयी निश्रा में वीतराग वंदना हेतु अग्रणी धर्मनिष्ठ समाजसेवी श्री रतनलाल मगनलाल देसाई कलकत्ता ने महोत्सवपूर्वक राष्ट्र को समर्पित किया।

तीर्थंकर उद्यान में श्राविका चम्पाबेन जयंतिलाल दामसुंगभाई अजबानी धानेरा डायमंड्स परिवार ने कलात्मक श्री महावीर कमल मंदिर का निर्माण कराया जिसकी प्रतिष्ठा गच्छाधिपति दीक्षा युग प्रवर्तक प.पू.आ.श्रीमद् रामचंद्र सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न तपोनिधि आ.श्री गुणयश सूरी.जी म.सा. के नेश्रातरक प्रवचन प्रभावक पूज्यपाद आचार्य देवेश श्रीमद् विजय कीर्तियश सूरी. जी महाराजा की निश्रा में चैत्र बदी ४ दि. २०.०३. २०१४ गुरुवार को जिनभक्ति महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रभु श्री पार्श्व की तपोभूमि श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ, नगपुरा

श्री जिन भक्ति के लिए उमड़ता जन सैलाब